कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्

डॉ. शालिनी सक्सेना

ईश्वर के अवतारों के सन्दर्भ में भगवान् नारायण के दशावतार माने गए हैं। दशावतार को वैज्ञानिक सृष्टि के विकासक्रम के रूप में देखते हैं। श्री विष्णु का प्रथमावतार 'मत्स्य' के रूप में हुआ। विज्ञान में भी सृष्टि का प्रारम्भ जलीय जीवों से ही माना गया है। द्वितीय अवतार 'कूर्मावतार' है जो जल व थल दोनों का वासी है। तृतीयावतार 'वराह' है जो दलदली भूमि में विचरण करता है। नृसिंह अवतार पशु व मनुष्य के मध्य की अवस्था है। वामन मानव के विकास की प्रारम्भिक अवस्था है। परशुराम पूर्ण मनुष्य हैं लेकिन प्रवृत्ति हिंसक है। रामवतार मानव के वनवासी युग का प्रतीक है। अष्टमावतार श्रीकृष्ण भगवान् विष्णु के पूर्णावतार हैं। 'बुद्ध' नवम व 'कल्कि' दशम अवतार हैं। ये तो विज्ञान का पक्ष हुआ भारतीय परम्परा में श्री कृष्ण को छोड़कर ये सब श्री विष्णु के अंशावतार थे केवल श्री कृष्ण श्री विष्णु के पूर्णावतार कहे गए हैं।

श्री कृष्ण भगवान् के पूर्णावतार हैं। व्यवसायात्मिका बुद्धि के चार रूपों में धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य और वैराग्य की पूर्णता श्रीकृष्ण के चरित्र में पूर्णतः दिखाई देती है। श्रीकृष्ण के अवतार का उद्देश्य अधर्म का विनाश एवं सज्जनों की रक्षा है। महाभारत में कहा गया है:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

धर्म की स्थापना के लिए श्रीकृष्ण का पूरा जीवन समर्पित है। धर्म की स्थापना के लिए ही वे पाण्डवों के पक्ष में खड़े थे। उनका प्रत्येक कार्य धर्म की रक्षा के निमित्त है। उनका चरित्र शुद्ध, सात्त्विक हैं, रज और तम का वहाँ स्पर्श भी नहीं है। धर्म की रक्षा के लिए वो गोकुल छोड़कर मथुरा चले आए और लौटकर गोकुल नहीं गए। न तो यशोदा का मोह और न राधा का राग कोई उन्हें नहीं बाँध सका। धर्म की रक्षा के लिए वे अपना मान और दम्भ सब छोड़ देते हैं। धर्म के प्रधान अंग सत्य का भी उन्होंने पालन किया। श्री कृष्ण ने दो धर्मों में परस्पर विरोध दिखाई देने पर उसके मध्य की भ्रान्ति को अपने आचरण और उपदेश के माध्यम से सुलझा दिया। धर्म का स्वरूप देश काल पात्र सापेक्ष होता है। ''श्रेयान् स्वधर्मः'' के वे पूर्णज्ञाता थे। दुष्टों का किसी भी प्रकार दमन वे धर्मानुमोदित मानते थे। अधार्मिक के साथ धर्मपालन उन्हें स्वीकार्य नहीं था। परीक्षित को जीवनदान देते समय उनका कथन 'मैंने आजन्म कभी धर्म या सत्य का अतिक्रमण नहीं किया हो, तो यह बालक जी उठे' उनकी धर्मपरायणता और धर्म की

अलौकिक शक्ति का प्रदर्शन ही है। बुद्धि का दूसरा रूप ज्ञान भी श्रीकृष्ण में अपने चरम रूप में विद्यमान था। व्यवहार, राजनीति, धर्म, दर्शन सब उनमें पूर्णता धारण करते हैं। वे सर्वज्ञान निधि थे।

बौद्धिक विकास का नाम ऐश्वर्य है। उसके प्रतिफल स्वरूप 'अणिमा' आदि सिद्धियां और अलौकिक बाह्य सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। द्वारिका की समृद्धि इसे सिद्ध करती है। भगवान् श्रीकृष्ण में जन्मना ऐश्वर्य विद्यमान है। आध्यात्मिक शक्तियों की विभूतियों के रूप में ही उनके अलौकिक कार्य हुए हैं। बुद्धि का चतुर्थ रूप वैराग्य भी उनमें चरम पर था। वैराग्य राग द्वेष का विरोधी है। इसकी पूर्णता यही है कि सब कार्य सम्पन्न करता हुआ भी, पूर्ण रूप से संसार में रहता हुआ भी अनासक्त रहे, किसी बन्धन में न बंधकर निर्लिप्त रहे। एक ओर जो कृष्ण गोप-गोपियों, नन्द-यशोदा व राधा के बिना एक क्षण नहीं रह सकते थे वे अक्रूर के साथ मथुरा जाने के बाद कभी लौटकर नहीं आए। रास मध्य में अन्तर्हित होकर समय-समय पर अपनी निरपेक्षता का प्रदर्शन उन्होंने किया था। जो प्रेम करने वाले के साथ प्रेम न करें वह आत्मसमा, आप्तकामा, अकृतज्ञ, गुरुद्रुह में से एक होता है या तो वह पूर्ण ज्ञानी होगा या कृतघ्न। उन्होंने अनेक दुष्ट राजाओं का वध किया और फिर उनकी सन्तानों को ही राज्य का अधिकार देकर राज्यलोलुपता से स्वयं को मुक्त रखा। वैराग्य का ही अन्य लक्षण समता है। श्रीकृष्ण के आचरण में यह भाव स्पष्ट है। हर एक यही मानता है कि श्रीकृष्ण मेरे हैं किन्तु वे किसी के नहीं होकर भी सबके हैं फिर भी सबसे स्वतन्त्र हैं। बुद्धि के उक्त सात्विक रूप जिसमें होते हैं वहीं भगवान् कहलाता है:

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णं भग इतीरणा॥
वैराग्यं ज्ञानमैश्वर्यं धर्मश्चेत्यात्मबुद्धयः।
बुद्धयः श्रीर्यशश्चैते षड् वै भागवतो भगाः॥
उत्पत्तिं प्रलयं चैव भूतानामगतिं गतिम्।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति।

भगवद्गीता में बुद्धि के सात्विक रूपों का विशद विवेचन हुआ है। योग के माध्यम से जीव में सात्विक बुद्धि के लक्षण प्रकट होते हैं फिर भी जीव में ये सप्रयास होते हैं और भगवान् में स्वतः सिद्ध। भगवान् श्रीकृष्ण में अव्ययपुरुष की पाँचों कलाओं का पूर्ण विकास है। इसीलिए गीता में उन्होंने स्वयं को स्थान-स्थान पर अव्ययपुरुष कहा है।

महाभारत में श्रीकृष्ण एक पूर्ण अवतार के रूप में चित्रित हुए हैं। उन्होंने माँ यशोदा को भी अपने पूर्ण एवं बृहद्स्वरूप का दर्शन करवा दिया था। वे शौर्य एवं वीर्य के प्रतिरूप हैं। राजनैतिक नेतृत्व के अद्वितीय उदाहरण हैं। वे नीति एवं न्याय के अनुगामी हैं। आसक्ति रहित, समता परायण, विरक्त कर्मयोगी, कुशल प्रशासक हैं। वे ज्ञान, विज्ञान और बौद्धिक क्षमता की पराकाष्ठा हैं।

अव्यय पुरुष की पाँच कलाएं हैं:- आनन्द, विज्ञान, मन, प्राण और वाक् । भौतिक समृद्धि एवं वाकशक्ति वाक् नामक कला है। श्री कृष्ण में यह पूर्णता से विद्यमान है। वाक् कला का अद्भुद् निदर्शन श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश है जो किंकर्तव्यविमूढ़ व्यक्ति को सन्मार्ग पर लाने के साथ मानव जीवन को अपने परम लक्ष्य की ओर उन्मुख करने में समर्थ है। बल, शौर्य, क्रियाशीलता प्राण नामक कला है। अपने बल एवं शौर्य का प्रदर्शन उन्होंने जन्म से ही प्रदर्शित करना शुरु कर दिया था। सद्यजात शिशुरूप कृष्ण ने पूतना के प्राण हर कर उसे उल्टा लटका दिया था। कुमारावस्था में पुराने अर्जुन-वृक्षों को एक झटके में उखाड़ फेंका तो किशोरावस्था में कंस के बड़े-बड़े योद्धाओं को धूल चटा दी। अपने जीवनकाल में भूमण्डल पर विद्यमान दुष्टों का संहार किया। उनके व्यक्तित्व में विद्यमान मनस्विता, उत्साह, मनमोहकता आदि मन नामक कला का परिणाम हैं। जरासन्ध, शिशुपाल एवं कंस जैसे धुरन्धर योद्धाओं से भयभीत हुए बिना उनका संहार करना मनस्वी श्रीकृष्ण की ही क्षमता थी। उनका मनोहारी रूप किसी को भी अपने वश में करने में समर्थ था। उनका सर्वज्ञत्व स्वरूप विज्ञान नामक कला का ही परिणाम है। विज्ञान से तात्पर्य संसार-ग्रन्थिमोचक आत्मविज्ञान है। भगवद्गीता का उपदेश इसी का परिणाम है। उनका स्वरूप आनन्दमय अलौकिक है यह आनन्द नामक कला के कारण है। वही ब्रह्म का मुख्य स्वरूप है। आनन्द के द्विविध भेद समृद्ध्यानन्द एवं शान्त्यानन्द दोनों की उपस्थिति श्रीकृष्ण में है। इष्ट प्राप्ति से होने वाला आनन्द समृद्ध्यानन्द तो दु:खनिवृत्ति पर होने वाला आनन्द शान्त्यानन्द है। समृद्ध्यानन्द के मोद, प्रमोद प्रिय आदि भेद उपनिषदों में प्रतिपादित किए गए है। इसी प्रकार शान्त्यानन्द के ब्रह्मानन्द, योगानन्द, विद्यानन्द आदि भेद प्राप्त होते हैं। इन सबकी उपस्थिति श्रीकृष्ण के अवतार में विद्यमान है। उनके दर्शनमात्र से प्राणी आनन्दविभोर होकर सुधबुध खो बैठता है। गोप- गोपियोंके साथ की लीलाएं, महारास आदि उनके आनन्दमय स्वरूप का आख्यान हैं। इस प्रकार अव्यय पुरुष की पंचकलाओं से युक्त श्रीकृष्ण भगवान् विष्णु के पूर्णावतार हैं। उनमें विष्णु की सौलह कलाएं यथावत् निहित हैं:- अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय, अतिशयिनी, विपरिनाभिनी, संक्रमिणी, प्रभवी, कुंठिनी, विकासिनी, मर्यादिनी, स्नेहालादिनी, आह्लादिनी, परिपूर्णा, स्वरूपावस्थिति।

भगवान् राम को श्री विष्णु का अंशावतार कहा गया है क्योंकि उनमें अन्तिम दो कलाएं नहीं थी क्योंकि रावण को दिए वरदान के अनुसार उन्हें मानवरूप में रावण का वध करना था। परिपूर्ण का तात्पर्य हर प्रकार के ज्ञान से सम्पन्नता है तो स्वरूपावस्थिति अपने वास्तविक स्वरूप में अवस्थित होना है। भगवान् राम के अवतार में विष्णु ने अपनी अन्तिम दो कलाओं को छिपाया और एक सामान्य मनुष्य के समान आचरण किया। भगवान् के प्रकाश का भौतिक शरीर के रूप में प्रतिभासित होना ही कला है। श्री राम में चौदह तो श्रीकृष्ण में भगवान् विष्णु का सम्पूर्ण आलोक आलोकित होता है। श्रीकृष्ण में जीव एवं ब्रह्म का अद्वितीय एकाकार अद्वय रूप हैं। यही उनके अवतार का सौन्दर्य है।

सामान्य मनुष्य में परमतत्त्व की पाँच कलाएं विद्यमान रहती हैं। साधना के माध्यम से वह आठ कलाओं तक की स्थिति में पहुँच सकता है। समस्त कलाओं को प्राप्त करने पर ही श्रीकृष्णरूप दिव्यात्मा कहलाते हैं। स्वयं परब्रह्म बन जाते हैं, अतः कलाएं जीव अथवा आत्मा के आध्यात्मिक उन्नयन की द्योतक हैं। श्रीकृष्ण हर दृष्टि से पूर्णावतार थेः- वे एक दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, राजनयिक, योद्धा, योगी, प्रेमी, त्यागी हर रूप में पूर्ण थे। किसी के लिए भी इन सब गुणों को एक साथ धारण करना सम्भव नहीं है लेकिन कृष्ण अवतार में वे इन सब कलाओं को साथ लेकर अवतरित हुए। रामवतार में उनका उद्देश्य पृथक् था वे नैतिक एवं धर्म सम्मत शासन की स्थापना का उद्देश्य लेकर अवतरित हुए थे।

कृष्णावतार का उद्देश्य बहुआयामी था। श्रीकृष्ण एक चपल बालक से लेकर एक निष्णात राजनयिक कूटनीतिज्ञ के साथ वेदान्त एवं योग की उच्चतम आध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त कर योगीश्वर की उपाधि प्राप्त करना उनके अवतार के उद्देश्यों में था। इसीलिए उन्हें पूर्णावतार कहा गया। श्रीकृष्ण असीम, निस्सीम निराकार हैं उनकी क्षमताएं अपरम्पार हैं। वे अपने जीवरूप, तुरीय रूप एवं परमात्मस्वरूप को जानते थे। इसीलिए कहा गया हैः- **कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।**

प्रोफेसर, भाषा विज्ञान,
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,
जयपुर